विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध

सरस्वती शिशु मन्दिर

सी - 41, सेक्टर - 12, नोएडा

ई - पत्रिका (अंक - 16) फरवरी - 2022

ज्ञानोदय

☎ 0120-4545608 WEBSITE: ssmnoida.in GMAIL: ssm.noida@gmail.com

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

सरस्वती शिशु मंदिर , सी - 41 , सेक्टर – 12, नोएडा

मासिक ई - पत्रिका फरवरी – 2022

ज्ञानोदय (अंक - 16)

संरक्षक

श्री वी.एल. मल्होत्रा

श्री प्रताप मेहता

श्री मधुसूदन दादू

श्री रविंद्र कुमार

श्री प्रदीप भारद्वाज

श्री सुशील कुमार

श्री असित कुमार त्यागी

मार्गदर्शक

श्री प्रकाश वीर (प्रधानाचार्य)

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

संपादक

बलवीर सिंह (आचार्य)

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

संपादक मंडल

श्री लेखराज सिंह, श्री दीपक कुमार

रेखा सिन्हा, हिमाद्री पुंढीर

क्रम - सूची

- प्रधानाचार्य जी की कलम से
- शुभकामनाएँ
- संपादकीय
- बसंत पंचमी- सरस्वती पूजन
- जयंतियाँ
- आचार्य क्रियाशोध
- प्रतिभा खोज प्रतियोगिता
- अभिभावक अभिव्यक्तियाँ
- भैया बहिनों की गतिविधियाँ
- प्रश्न पत्र निर्माण कार्यशाला
- अमृतवाणी
- सामान्य ज्ञान
- बच्चों का कोना
- क्रियाशोध कार्यशाला
- राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

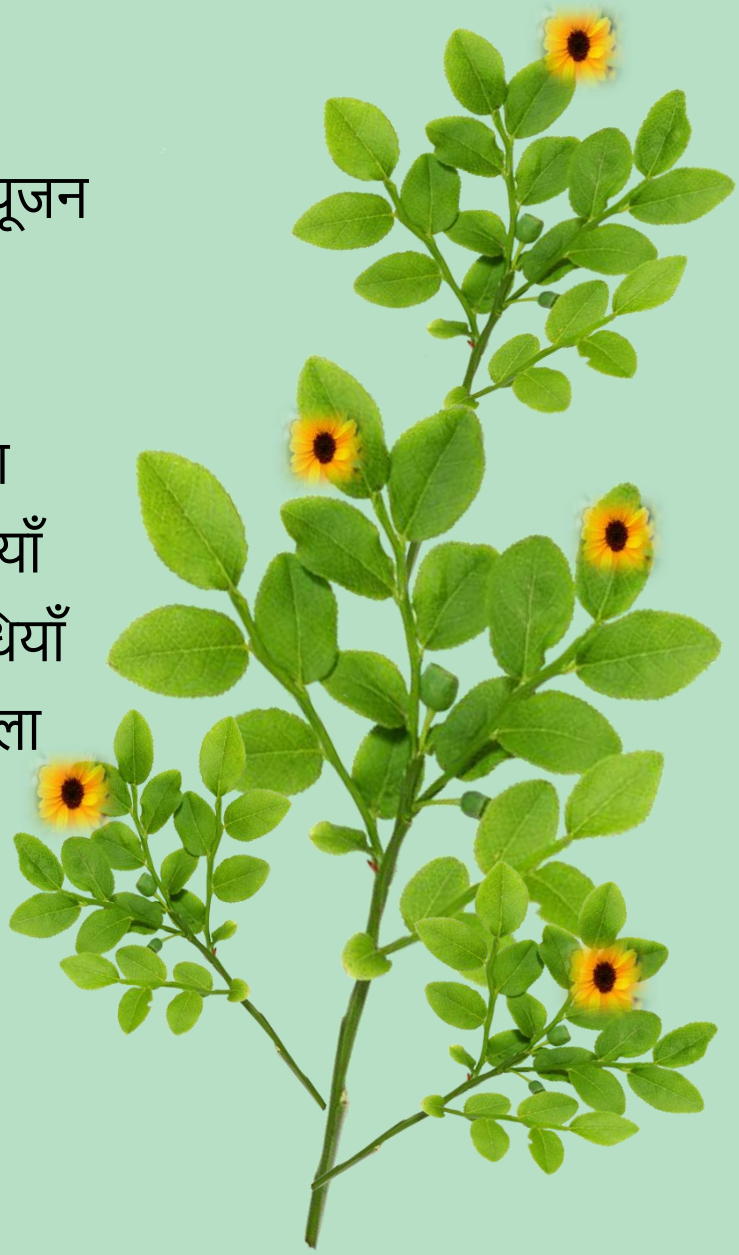

प्रधानाचार्य जी की कलम से...

ज्ञान प्राप्ति का सजीव माध्यम है आत्मीयता

जीवन में शिक्षा के साथ एक महत्वपूर्ण तत्व है आत्मीयता। आत्मीयता, प्यार, स्नेह व ममता। आत्मीयता के द्वारा ही आत्मविश्वास भरे शब्दों में निश्चय गूंजा देता कि नान्या पंथ विद्यते अयनाय। उसके लिए वही एकमेव रास्ता है, अन्य कोई नहीं। आत्मीयतापूर्ण वह स्थिति है जो गुरु में गुरुत्व प्रदान करती है मां, भाई, पिता, पड़ोसी, मित्र ही नहीं, पर्यावरण तक सभी में जिज्ञासु के प्रति यह तड़पन हो सकती है। एक रूप में वे सब गुरु हैं फिर उस आत्मा का भला क्या कहना जो गुरु पद से विभूषित है। गुरु का तो रोम रोम अपने शिष्य की हितकामना में अहर्निश लगा रहता है। इसलिए इस "मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत्" वाली गुरुत्व की तड़पन कोई गुरु ही समझ सकता है।

प्रकाश वीर (प्रधानाचार्य)

स ० शि ० मं ०, नोएडा

शुभकामना संदेश

परम स्नेही श्री बलवीर जी
ई – पत्रिका ''ज्ञानोदय''
सरस्वती शिशु मन्दिर,
सेक्टर–12, नोएडा (गौतमबुद्ध नगर)

मुझे विदित हुआ है कि सरस्वती शिशु मंदिर मन्दिर, नोएडा की मासिक ई–पत्रिका ''ज्ञानोदय'' के फरवरी अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। साहित्य समाज का दर्पण होता है। सद्साहित्य समाज को नवीन चेतना एवं सुयोग्य दिशा-निर्देशन प्रदान करता है।

आपने सम्पादक मण्डल एवं विषय-विशेषज्ञों के अमूल्य विचार प्राप्त कर इस अंक में प्रेरणादायी लेख उपलब्ध करवाये हैं। यह पत्रिका आचार्य बन्धुओं/बहिनों, भैया/बहिनों एवं अन्य हितधारकों को अवश्य ही लाभान्वित करेगी, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है। ''ज्ञानोदय'' के सफल प्रकाशन की शुभकामनाएं देता हूँ।

भवदीय

थ्दनांक – 27.02.2022

मदनपाल सिंह (सम्भाग निरीक्षक)
गाजियाबाद सम्भाग जन शिक्षा समिति (प0उ0प्र0)
मो0नं0 – 09389819969

शुभकामना संदेश

प्रिय संपादक बंधु,

"ज्ञानोदय" ई-पत्रिका

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि सरस्वती शिशु मन्दिर नोएडा अपनी मासिक ई -पत्रिका का फरवरी माह अंक प्रकाशित करने जा रहा है। पत्रिका में भारतीय संस्कृति से भरपूर पठनीय सामग्री एवं विद्यालय के क्रियाकलापों का समावेश होगा। बच्चों को आधुनिक तकनीकि का भी ज्ञान होना चाहिए।

मुझे पूर्ण आशा है कि यह पत्रिका भैया-बहिनों के साथ-साथ आचार्यों तथा समाज के अन्य जनों का भी मार्गदर्शन करेगी। पत्रिका के संपादन के लिए आपको हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

महेश गुप्ता (C.A.)
नोएडा, गौतमबुद्ध नगर

शुभकामना संदेश

बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए सरस्वती शिशु मंदिर विद्यालय की यह नई पहल ज्ञानोदय मासिक ई -पत्रिका अत्यंत शुभ समाचार है । बच्चों के लिए ज्ञानोदय ई -पत्रिका ज्ञान का भंडार होगी, जहां बच्चे बहुत कुछ जान पाएंगे और समझ पाएंगे ।

ऐसे में मेरी ओर से शुभकामनाएं कि यह पत्रिका इसी तरह बच्चों के लिए काम करती रहे और उनका ज्ञान बढ़ाने में सहयोग करने में अग्रसर रहे ।

इसी के साथ मैं अपने इस संदेश को दो पंक्तियों में समाप्त करना चाहूंगी ।

बच्चों को ज्ञान का सागर मिलता वहां,
ज्ञानोदय मासिक ई -पत्रिका है जहां ।

डॉ0 मीता लवानियां (साइंटिस्ट)
सीनियर फेलो एंड एरिया कन्वेनर

शुभकामना संदेश

श्री बलवीर सिंह जी (संपादक) "ज्ञानोदय",

आपके पत्र द्वारा विद्यालय की फरवरी माह की ई-पत्रिका प्रकाशन की जानकारी मिली, अत्यंत प्रसन्नता हुई कि विद्यालय परिवार नित नए प्रयोग कर रहा है। विद्यालय परिवार द्वितीय गुरु के रूप में मानव उद्धार के द्वारा राष्ट्र कार्य में लगा है।

पत्रिका द्वारा हम व्यक्तिगत चरित्र के साथ-साथ राष्ट्रीय चरित्र को भी मजबूती प्रदान करेंगे, क्योंकि इसी राष्ट्रीय चरित्र की कमी के कारण ही देश ने हज़ार वर्ष की गुलामी का दंश झेला, जिसकी पुनरावृत्ति ना हो।

पुनः पत्रिका के सफल संपादन हेतु पूरी टोली को शुभकामनाएँ।

मधु मेहता
समाजसेविका नोएडा

संपादकीय

सदाचार का अर्थ है उत्तम आचरण । सदाचार दो शब्दों से मिलकर बना है – सत + आचार । 'सत्' का अर्थ है 'सही' और 'आचार' का अर्थ है 'आचरण' । अतः सदाचार का अर्थ हुआ 'सही आचरण'। सदाचार की चमक के आगे सँसार के हर प्रकार की धन-दौलत की चमक फीकी है ।

आधुनिकता की दौड़ में आज बच्चे नैतिकता, कर्तव्य, सदाचार और ईमानदारी जैसे मूलगुणों को भूलते जा रहे हैं । आजाद भारत का सपना साकार करने वाले अमर शहीदों को भी भूलते जा रहे हैं। आजकल के इसी वातावरण को देखते हुए हमारे विद्यालय में सदाचार का पाठ पढ़ाया जाता है।

मेरा मानना है कि आने वाली पीढ़ी को आधुनिकता के दुष्प्रभाव से बचाने और उन्हें देश के शानदार अतीत की झलकियां दिखाने के लिए विद्यालयों में छात्रों को देशभक्ति और नैतिकता का पाठ पढ़ाया जाए।

सभी सुधी पाठकों से अनुरोध है कि पत्रिका भैया -बहिनों के लिए और अधिक ज्ञानवर्धन बने तथा पत्रिका में यदि कोई न्यूनता रही हो तो उसमे सुधार के लिए आपके सुझावों का मैं ह्रदय से स्वागत करुँगी

हिमाद्री पुंढीर

अंक-संपादक

बसंत पंचमी- सरस्वती पूजन

दिनांक- 5 फरवरी 2022 को बसंत पंचमी के शुभ अवसर पर विद्यालय में हवन के साथ सरस्वती पूजन हर्षोल्लास से मनाया गया तथा वीर हकीकत राय के बलिदान को भी याद किया गया।

जयंतियाँ

श्री
सन्त रविदास
ॐ

विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध
सरस्वती शिशु मन्दिर
सी-41, सैक्टर-12
नोएडा, गौतमबुद्ध नगर

दिनांक -15 फरवरी व दिनांक 19 फरवरी 2022 को विद्यालय में क्रमशः

संत रविदास, छत्रपति शिवाजी महाराज व

प० पू ० माधवराव सदाशिव राव गोलवलकर 'श्री गुरूजी ' की जयंतियां हर्षोउल्लास के साथ मनाई गईं।

Action Research

Topic:-Error of using punctuations.

Objective:-

- To develop correct punctuations of English sentences.
- To delvelop writing practice in students.

Hypothesis:-

- Lack of writing practice.
- Lack of interest in writing.
- Parents do not pay attention to children.

Analysis:-

- To find which types of errors students made while writing.

Conclusion:-

- Students improved their writing skills and correct punctuations.

Researcher:-Tanuja Rawat

आचार्य क्रियाशोध

विषय:- भैया/बहिनों की लेखन में त्रुटियां

समस्या:- भैया/बहिनों को अभ्यास कार्य करवाते समय निरीक्षण किया गया जिसमें पाया कि भैया/बहिनों को वर्णों एवं शब्दों की सही पहचान न होने के कारण वे लेखन में त्रुटियां कर रहे हैं।

समाधान:-

1-अभिभावक सम्पर्क कर उन्हें इस विषय से अवगत करवाते हुए समस्या के प्रति जागरूक किया ।
2-कक्षा में कार्य करवाते समय उन पर विशेष ध्यान दिया।
3-ऐसे भैया/बहिनों को अलग से शब्दों का अभ्यास हेतु श्रुतलेख लिखवाई जाएगी।

परिणाम:- 1- भैया/बहिनों को अलग से करवाये गये अभ्यास से उनकी लेखन सम्बन्धित त्रुटियों में सुधार हुआ।

शोध प्रमुख:- आचार्या सरोज रावत

आचार्य क्रियाशोध

विषय - भैया बहनों की ऑनलाइन कक्षा में अनुपस्थिति की समस्या

समस्या -जब भैया बहनों की ऑनलाइन कक्षा लेती थी तो मैंने पाया बहुत बच्चे अनुपस्थित रहते हैं जिनके कारण उनका कार्य भी अवरोधित हो रहा था ।
अभिभावक गोष्ठी के उपरांत ज्ञात हुआ कि उनके पास एक ही मोबाइल है और शिशुओं की संख्या 2 है तो इसलिए एक ही शिशु ऑनलाइन कक्षा मे ही उपस्थित रह पाता था ।
कुछ अभिभावकों के पास स्मार्टफोन भी नहीं था ।
3- नेटवर्क प्रॉब्लम के कारण भी लिंक देर से पहुंचता था ।

समाधान- 1 - मैंने सुझाव दिया कि तीन-तीन दिन अलग-अलग भैया बहनों को ऑनलाइन कक्षा करने दी जाए जिससे कि दोनों का कार्य सुचारु रुप से चलता रहे ।
2-लिंक प्रेषित करते समय मैंने भी समय से पूर्व लिंक भेजने का ध्यान रखा ।
3-जिनके पास स्मार्टफोन नहीं था उनके लिए मैंने पीडीएफ बनाकर उनकी हार्ड कॉपी अभिभावकों तक पहुंचवाई ।

परिणाम -मेरे इस प्रयास के द्वारा भैया बहनों की ऑनलाइन क्लास लेने की संख्या में अत्यंत वृद्धि हुई और उनका कार्य भी बाधित नहीं हुआ वे समय से कार्य भी कर पाए ।
जिनके पास स्मार्टफोन नहीं था उन्होंने विद्यालय में आकर पीडीएफ प्राप्त करके अपना कार्य भी पूर्ण कर लिया।

शोध प्रमुख
आचार्या संगीता गोयल

आचार्य क्रियाशोध

विषय:- भैया/बहिनों की पुस्तक-पठन में त्रुटियां

समस्या:- भैया/बहिनों को पुस्तक पढ़वाते समय निरीक्षण किया गया जिसमें पाया कि भैया/ बहिनों को वर्णों एवं शब्दों की सही पहचान न होने के कारण वे पढ़ने में त्रुटियां कर रहे हैं।

समाधान :

1-अभिभावक सम्पर्क कर उन्हें इस विषय से अवगत कराया गया। तथा अभिभावक बन्धुओं को भी इस समस्या के प्रति जागरूक किया गया।
2-कक्षा में कार्य करवाते समय उन पर विशेष ध्यान दिया गया। तथा बार-बार पुस्तक को पढ़ने का आग्रह किया गया।
3-ऐसे भैया/बहिनों को अलग से शब्दों को पढ़ने तथा लिखने का अभ्यास कराया गया।

परिणाम:-

1- भैया/बहिनों को अलग से करवाये गये अभ्यास से उनकी पढ़ने सम्बन्धित त्रुटियों में सुधार पाया गया।

2- भैया/बहिनों का पुस्तक-पठन की क्षमता में विकास हुआ।

शोध प्रमुख

आचार्य लेखराज सिंह

Action Research

Topic: Problem of correct pronunciation and writing of words in English subject.

Problem: I found that many students had problems with correct pronunciation of words and writing of words. This was due to regional influence and less practice of phonic drill.

Solution: 1. I constantly paid attention to students.

2. Developed correct pronunciation and writing skill.

3. Constantly checked the copy and got the students focused on incorrect spellings.

4. Students rewarded for correct pronunciation.

5. I gave one page writing everyday to write at home.

6. Constantly talking to the parents about student's improvement.

7. Practice of phonic drill.

Result: 1. Students behaviour improved.

2. Student started to pronounce correctly and their writing skill also developed

3. The students improved a lot compared to before.

Researcher

Arunima Srivastava

प्रतिभा खोज प्रतियोगिता

Pragya mishra

Diksha Vyas

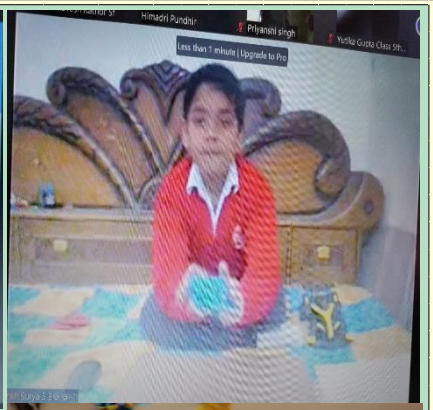

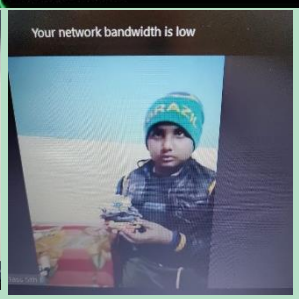
Your network bandwidth is low

Tanmay 5th (B)

SAVE GIRL CHILD

Hansika Jhade 4th (f)

Shreyashi Kushvaha
Shreyan Sanvi Khatri

Trijal kumar
Inchi Sharma

Ritvik Rajvanshi

अभिभावक अभिव्यक्तियाँ

बालक के जीवन में सुलेख का महत्व

विद्यार्थी के जीवन में सुलेख का अपना विशेष महत्व है, अच्छा सुलेख एक कला है जो हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करता है जिसका असर बालक के व्यक्तित्व में भी दिखलाई देता है। इसलिए बालकों को अपने सुलेख पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

बालकों में अच्छे लेखन की कला के लिए शिक्षक और माता - पिता के संयुक्त प्रयास से और उन्नत किया जा सकता है। लिखावट सुधारना कोई बड़ी बात नहीं है इसके लिए आपको निरंतर अभ्यास करना होगा ।

कविवर वृन्द भी दोहे के माध्यम से कहते हैं -

करत -करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान ।
रसरी आवत-जात ते, सिल पर परत निसान ।।

जैसे कूंए की जगत पर लगी सिल (शिला) पानी खींचने वाली रस्सी के बार-बार आने-जाने से, कोमल रस्सी की रगड़ पडने से घिसकर उस पर निशान अंकित हो जाया करता है। उसी तरह निरंतर और बार-बार अभ्यास यानि परिश्रम करने से आपकी लिखावट सुलेख में बदल जाएगी।

शिवदयाल झाड़े
हंसिका झाड़े- 4 F

बालक के जीवन में सुलेख का महत्व

सुलेख किसी भी बालक के विकास में अत्यंत ही महत्वपूर्ण पक्ष है। इसके माध्यम से बालक की शब्द शक्ति बढ़ती है,बालक इसके माध्यम से शब्दों की संरचाना को आसानी से समझ सकता है। नित्य नए -नए शब्दों से परिचित होता है। इस लिहाज से सुलेख का महत्व और बढ़ जाता है। लिखते समय तो इसका पता नहीं चलता लेकिन जब वही बालक बड़ा होकर लिखता है, तो वह अच्छी लिखावट करता है। बालक के बड़े होने के बाद इस सुलेख अभ्यास का महत्व पता चलता है। किसी भी बालक के सर्वांगीण विकास के लिए सुलेख अत्यंत महत्वपूर्ण है। इससे भाषा की समझ, शब्द की समझ होती है और बालकों में लेखन की शैली विकसित होती है एवं बालक शब्दों के भावों से भी परिचित होता है। इस लिहाज़ से बालक के जीवन का पहला पड़ाव सुलेख लेखन है।

जो जितना अच्छा सुलेख लिखता है, उसकी भाषा और शब्द को पहचानने की शक्ति बढ़ती है। इस लिए बालक के विकास के लिए सुलेख लेखन एक आवश्यक तत्व है।

रीमा राज

दिव्यंम – 1st F

बालक के जीवन में सुलेख का महत्व

बालक के जीवन में सुलेख का बहुत ही महत्व है।एक अभिभावक या शिक्षक को चाहिए कि वे बालक को सुलेख के लिए प्रोत्साहित करें। जब बालक सुन्दर और साफ अक्षरों में लिखता है तो उसका मस्तिष्क पूरी तरह से एकाग्रचित होता है और वह विषयों को अच्छी तरह से समझ और याद कर पाता है।

दूसरी तरफ सुलेख में लिखे हुए विषय शिक्षक या परिक्षक को भी स्पष्ट रूप से समझ में आ जाते हैं, जोकि विद्यार्थी कोपरीक्षा में अधिक अंक प्राप्त करने में मदद करते हैं।

सुलेख का बालक के व्यक्तित्व पर भी बहुत सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। उसमें अपने काम को सुन्दर और सही तरीके से करने की आदत विकसित होती है। इससे बालक में सृजनात्मक और कलात्मक गुणों का विकास होता है, जोकि बालक के भावी जीवन के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण हैं।

रजनी त्रिपाठी
शिवानी त्रिपाठी, 1st- F

बालक के जीवन में सुलेख का महत्व

सुलेख अर्थात सुंदर लेख किसी भी बच्चे को जब सुलेख लिखने के लिए दिया जाता है, तो उससे बच्चों का मस्तिष्क तेज होता है, और बच्चे मेधावी होते हैं। सुलेख बच्चों को उनकी लेखनी सुधारने के काम में आता है। सुंदर लिखना भी एक कला है सुलेख लिखना भी बहुत आवश्यक होता है, क्योंकि आजकल के मोबाइल यांत्रिक युग में भी सुलेख का बहुत महत्व है । सुंदर लिखावट हर बच्चा नहीं लिख पाता क्योंकि कहीं ना कहीं उसकी लिखावट में भी कुछ त्रुटियां हो ही जाती हैं जिससे लिखावट सुंदर नहीं हो पाती। सुलेख लिखना भी विद्यार्थी जीवन के व्यक्तित्व का एक आईना है , क्योंकि वह उस विद्यार्थी की प्रतिभा को प्रदर्शित करता है और साथ ही साथ उसके मस्तिष्क की सोचने की क्षमता को दर्शाता है । सुंदर लिखावट के साथ-साथ बुद्धि गुण दोषों और उसके मन में मस्तिष्क के स्वस्थ शिक्षित होने का पता लगाया जा सकता है।

जिस विद्यार्थी की लिखावट अच्छी होती है, वह विद्यार्थी ज्यादा संवेदनशील एवं दयालु होते हैं। साथ ही साथ बड़ों का आदर भी करते हैं। सुंदर लिखने से हमारे हाथों की छोटी से छोटी मांसपेशियों का व्यायाम होता है और इससे हमारे हाथ मजबूत बनते हैं। हम उस शब्द को अपने मन में याद करते रहते हैं जिसको हम कई बार लिखते हैं, इसीलिए अवश्य लिखना चाहिए।

साधना पांडेय

अभिनव पांडे, 3-F

बालक के जीवन में सुलेख का महत्व

सुलेख का बालक के जीवन में बहुत महत्व होता है। अक्षर को धीरे-धीरे सुंदर बनाकर लिखना सुलेख कहलता है। सुंदर लिखावट वाले छात्र के अधिक अंक मिलते हैं। बच्चों को सुलेख सिखाने के लिए बचपन से ही प्रयास करना चाहिए। सुलेख से बच्चों के अंदर छुपी हुई प्रतिभा का भी पता चलता है।

सुलेख के बारे में गांधी जी ने कहा था कि जब वह अफ्रीका गये और वहां के नवयुवकों के मोती जैसे अक्षर देखकर अपने अक्षर सुधारने की कोशिश की तो वह नहीं हो सका, क्योंकि जैसे पके हुए घड़े पर मिट्टी नहीं चढ़ सकती , उसी तरह से परिपक्व हो गए बालक की लिखावट नहीं सुधार सकते हैं। अच्छी लिखावट शिक्षा का एक अंग है। सुलेख के कुछ नियम हैं जिनका पालन करके ही बच्चे अपनी लिखावट सही कर सकते हैं। लेख लिखते समय कुछ चीजों को ध्यान में रखना चाहिए। बालक के जीवन में सुलेख बहुत महत्व है इसलिए सुलेख पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

अर्चना कुमारी

ओम कृष्ण, 5- F

बालक के जीवन में सुलेख का महत्व

यदि बच्चे अंदर से सशक्त होंगे तो बच्चो के विचारों में उसका सौंदर्य झलकेगा। वहीं सौंदर्य कलम से कागज पर सुलेख के रूप में उतरेगा । जिससे बच्चों के व्यक्तित्व की पहचान होती है। जल्दबाजी में लिखे गए शब्द जहां बच्चों के अंतर्मन की कुंठा और आक्रोश के परिचायक हैं, वहीं इनमें बच्चो की लापरवाही भी प्रदर्शित होती है। इसलिए समाज में प्रतिष्ठित पदों पर सुशोभित व्यक्तियों से अपनी हैंड राइटिंग में सुधार अपेक्षित है। बड़े व्यक्ति तो अपनी राइटिंग में कम ही सुधार कर पाएंगे लेकिन वर्तमान परिवेश में बच्चे पेंसिल और बॉल पेन से कॉपी पर सुलेख लिख सकते हैं।

महात्मा गांधी के अनुसार सुलेख व्यक्ति की शिक्षा का एक आवश्यक पहलू है। सुलेख वह कला है जिसमें विभिन्न शैलियों के अनुसार सही ढंग से और सौंदर्य बोध के साथ अक्षरों को बनाते हुए लेखन होता है। इसलिए सुलेख पठनीयता से आगे निकल जाता है । यह न केवल अक्षरों को समझा जा रहा है, बल्कि यह स्वयं बच्चों के लेखन के कार्य में सुंदरता पैदा करना चाहता है। सुलेख शिक्षित व्यक्ति का आवश्यक लक्षण है।

ब्रिजेन्द्र कुमार मिश्रा

नंदिनी मिश्रा, 5-F

बालक के जीवन में सुलेख का महत्व

डॉक्टरी पर्चे में सुलेख के संदर्भ में यही कहना समीचीन लगता है कि सुलेख हमारे आंतरिक विचारों के प्रतिबिंब होते हैं। यदि हम अंदर से सशक्त होंगे, तो हमारे विचारों में उसका सौंदर्य झलकेगा। वही सौंदर्य कलम से कागज पर सुलेख के रूप में उतरेगा, जिससे हमारे व्यक्तित्व की पहचान होगी। जल्दबाजी में लिखे गए शब्द जहां आपके अंतर्मन की कुंठा और आक्रोश के परिचायक हैं, वहीं इनमें आपकी लापरवाही भी प्रदर्शित होती है। जहां तक डॉक्टरों के सुलेख की बात है, तो उनके लिखे हुए शब्द मरीज को जीवन-दान देते हैं और सही तरीके से न समझ पाने पर मौत भी। इसलिए समाज में प्रतिष्ठित पदों पर सुशोभित व्यक्तियों से अपनी हैंड राइटिंग में सुधार अपेक्षित है। बड़े व्यक्ति तो अपनी राइटिंग में कम ही सुधार कर पाएंगे, लेकिन वर्तमान परिवेश में बच्चे पेंसिल और बॉल पेन से कॉपी पर सुलेख लिख सकते हैं।

एक ओर, सुलेख वह कला है जिसमें विभिन्न शैलियों के अनुसार सही ढंग से और सौंदर्य बोध के साथ अक्षरों को बनाते हुए लेखन होता है। इसलिए, सुलेख, पठनीयता से आगे निकल जाता है। यह न केवल अक्षरों को समझा जा रहा है, बल्कि यह स्वयं लेखन के कार्य में सुंदरता पैदा करना चाहता है।

सुलेख का अभ्यास ज्यादातर छोटी कक्षा 1 से 8 तक के विद्यार्थियों को कराई जाती है। यह हस्त लेखन और मात्रा सुधारने की प्रक्रिया होती है, इसके नियमित अभ्यास से बच्चों का हिंदी हैंड राइटिंग और मात्रा सुधर जाती हैं । इसलिये हम सुलेख शब्द को अभ्यास लेखन भी कह सकते हैं ।

रुचि शर्मा

सृष्टि शर्मा, 3-F

बालक के जीवन में सुलेख का महत्व

सुंदर लेखन अपने आप में एक कला है सुंदर लेख हर किसी को अपनी तरफ आकर्षित करता है। शिक्षा मनुष्य जीवन का निर्माण करती है। सुलेख से विद्यार्थी के लिखने की गति में तेजी आती है। सुलेख से विद्यार्थी की गलतियां कम से कम बल्कि ना के बराबर हो जाती हैं सुलेख वह कला है, जिसमें विभिन्न शैलियों के अनुसार सही ढंग से और सौंदर्य बोध के साथ अक्षरों को बनाते हुए लेखन होता है। यहां न केवल अक्षरों को समझा जाता है, बल्कि यह स्वयं लेखन के कार्य में सुंदरता पैदा करने में भी सहायक होता है।

रिंकी मंडल
रिद्धिमा मंडल, 2 F

बालक के जीवन में सुलेख का महत्व

सुंदर लेख हर किसी को अपनी तरफ आकर्षित करता है।

सुंदर लेख अपने आप में कला है। शिक्षा मनुष्य जीवन का निर्माण करती है।

शिक्षा में सुलेख का अपना महत्व है। सुंदर लेख ना होने पर परीक्षा में अच्छे अंक नहीं मिल पाते हैं।

आलोक कुमार दुबे
अदिति 2F

भैया - बहिनों की गतिविधियाँ

Class - 1st

Class - 1st

प्रश्न पत्र निर्माण कार्यशाला

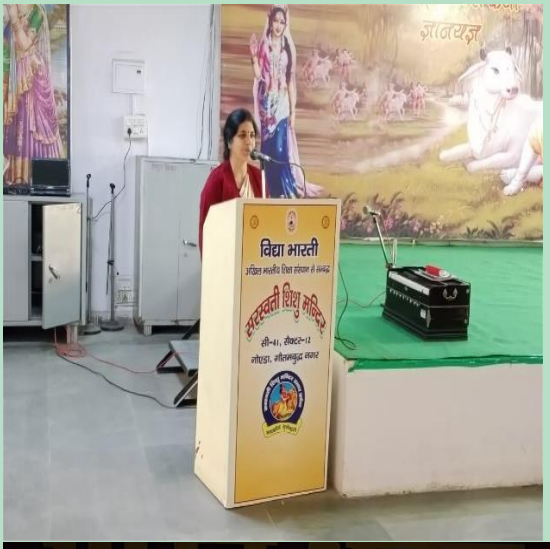

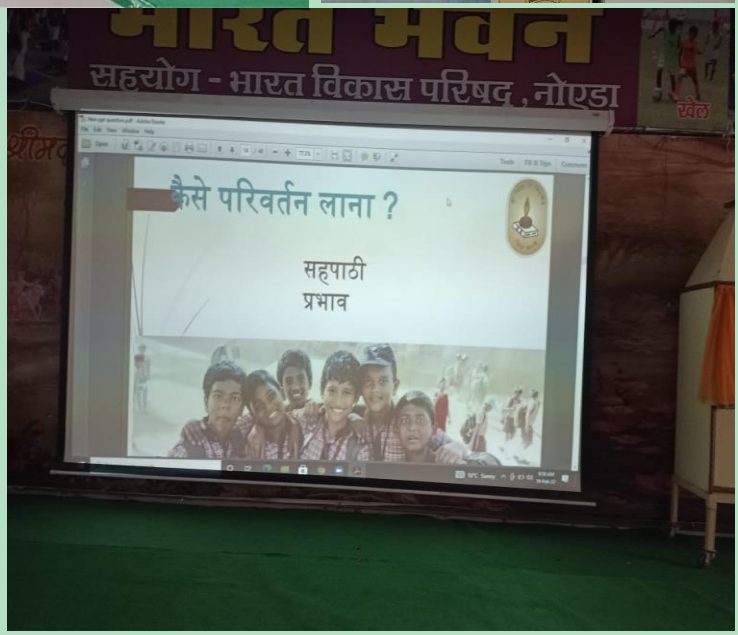

दिनांक 19 फरवरी 2022 को विद्यालय में प्रश्न पत्र निर्माण कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें विद्यालय की आचार्य श्रीमती विधि शर्मा जी ने प्रश्न पत्र निर्माण की प्रक्रिया के बारे में प्रोजेक्टर द्वारा विस्तार से बताया तथा आचार्य श्रीमती मीरा स्मृति व आचार्य घनश्याम सिंह जी ने भी प्रश्न पत्र की बारीकियों के बारे में समझाया।

अमृतवाणी

जीवन वही निखरता है जो कष्टों से टकराता है

जीवन वही निखरता है,
जो कष्टों से टकराता है।
सोना वही चमकता है,
जो आग तपाया जाता है।।
रगड़ और घर्षण यद्यपि,
कठोर कर्म से लगते हैं।
पर संघर्षों में तप कर,
सद्गुण श्रेष्ठ उभरते हैं।।
अति प्रतिकूल परिस्थितियां,
बाधाएं नित आती हैं।
उलझनें, समस्याएं अगणित,
बहुधा आँख दिखाती हैं।।
वीर, साहसी धैर्यवान,
इनको निपटाते जाते हैं।
लाख रुकावटें हों लेकिन,
वे अपनी मंजिल पाते हैं।।

-प्रेरणा प्रसून

सामान्य ज्ञान

. Mathematics (Questions)

Q1.Write the Successor of 99099_____ (99100)

Q2.Write Smallest number of 5 digit. (10,000)

Q3.625÷___=25 (25)

Q4._____tens make a crore. (1000000)

Q5. (10,000÷50) X 5=___300 (1,000)

Q6.3,00,000÷_____=300 (1.000)

Q7. (321 x9) – ___= 2,888 (1)

Q8.The largest 9-digit number ending with 07is _____ (99,99,99,997)

Q9._____x1,000= 9,98,20,000 (99,820)

Q10.1,00,00,000 – 10,00,000 =_____ (90,00,000)

Q11. (33x3) +(3÷3)=_____(100)

Q12.The least multiple which is common for both 15 and 25 is_____ (75)

Q13. I am a number between 660 and 665. I am divisible by 3 not by 6 what number am I ? (663)

Q14. 672 is divisible by_____ (2,3,4,6,8)

Q15. LCM 3, 8 and 9 is_____(72)

Q16.H.C.F of 90, 96 and 10_____. (2)

Q17. Mixed fraction for $\frac{39}{12}$ is_____($3\ \frac{3}{12}$)

Q18.Product of $\frac{12}{24}$ and $\frac{36}{72}$ is ___ ($\frac{1}{4}$)

Q19. Reciprocal of 3½ ___($\frac{2}{7}$)

Q20.Raju Scored 16 marks of 25. Its fractional form is ___ $\left(\frac{16}{25}\right)$

Q21.Gopal Reads $\frac{3}{5}$ of a book. He finds that there are still 80 pages left to be read.. The total number of pages in the book _____ 200)

Q22. In 100.0827 the place value of 8. ($\frac{8}{100}$ Or 00.08)

Q23. 7.02, 77.02, 6.65 are called _____(like decimal)

Q24. What is the number whose 60% is 90? (150)

Q25. To change percentage into decimal_____ by 100 (divide)

Q26. 8% =_____ ($\frac{8}{100}$ or 00.08)

Q27. Seema had Rs. 5 and spent Rs.2.50 for a pencil. How much money was left with her? (Rs.2.50)

Q28. 0.7x3 =_____ (2.1)

Q29._____÷ 1000 =7.531 (7531)

Q30. Ravi covered a distance of 1000 mitre in 10 minutes How much did he cover in 1 minute? (100m)

Q31. 79.9x (1001x0)=_____ (0)

Q32. 1.10+2.10+3.10=_____(6.30)

Q33. 25% = ____$\left(\frac{1}{4}\right)$

034. What % Is 76 of 30=___ (25%)

Q35. C.P=Rs.6.9, S.P=Rs35, Overhead charges =Rs. 10. Then the loss_____. (Rs.44)

Q36. CP=Rs. 300, Profit Percentage=20%, Therefore the profit is_____ (Rs.60)

Q37. A dot represent a _____.(point)

Q38.A _____has two end point. (Line Segment)

Q39. A right angle measures (90°)

Q40.measures more than 90° but less than 180° (An obtuse angle)

041. The measure of straight angle is_____(180)

Q42. A whole angle is an angle which measure_____(360°)

Q43. A_____ used for measuring angles.(protractor)

Q44.If S.P>C.P.Then profit =_____(S.P-C.P)

Q45. The sides of triangle are 8cm, 10cm and12cm find the perimeter.(30cm)

Q46. Diameter of circle is. (half of radius)

Q47. The sum of the angle of a triangle is_____(180)

048 Volume of Cuboid =_____x_____x____(length x breadth x height)

Q49. If x= 1, y = 2 and Z = 5. find the The value of → 3X-2Y+4Z. (19)

Q50. A good and common example for Parallel Lines is_____ (Railway track)

बच्चों का कोना

चलो, खोज निकालें.....

एकात्मता स्त्रोत का एक श्लोक दिया है। इसमें हमारे ग्यारह प्राचीन महापुरुषों के नाम नीचे भ्रमवर्ग में फंसे हैं। उन्हें खोजें।

हनुमान जनको व्यासो वशिष्ठश्च शुको बलि :

दधीचिविश्वकर्ममाणौ पृथु वाल्मीकि भार्गवा :

		ल	ब	लि	अ		
	ह	रा	द	धी	चि	ई	
ध	नु	नि	भा	ज	वा	ल्मी	कि
र्म	मा	दा	र्ग	न	ह	वि	ल
भ	न	त	व	क	रि	श्व	न्द्र
व	सि	ष्ठ	य	शु	पृ	क	की
	अ	व्या	स	क	थु	र्मा	
		ह	व	द	द		

प्रश्न -

1.अस्थि का वज्र बनाने के लिए अपना बलिदान देने वाले ऋषि का नाम क्या है?

2.महाभारत की रचना किसने की?

3.शिकारी से ऋषि बनकर रामायण लिखने वाले कौन है?

4.राम के अनन्य भक्त कौन थे?

(उत्तर और जवाब अन्य पेज पर हैं।)

उल्टा- पुल्टा

नीचे बोर्ड पर नोबेल पुरस्कार विजेता भारतीयों के नाम अक्षरों का क्रम बदल कर लिखे हैं । उन्हें आप सरल करके सही नाम लिखिए।

1. ना र विं गो द्र टै र

2. म सी. वी. र न

3. खु ह रा गो र विं द ना

4. म सु ब्र ह्म चं द्र शे ख ण्य र

5. से अ म र्त्य न

6. म न वें क ट कृ र म रा ष्ण न

7. स कै ला श र्थी त्या

8. जी अ भि त ब र्जी न

उत्तर-

रविंद्र नाथ टैगोर, सी.वी. रमन हरगोविंद खुराना, सुब्रह्मण्यम चंद्रशेखर, अमर्त्य सेन, वेंकटरमन रामकृष्णन, कैलाश सत्यार्थी, अभिजीत बनर्जी

क्रियाशोध कार्यशाला

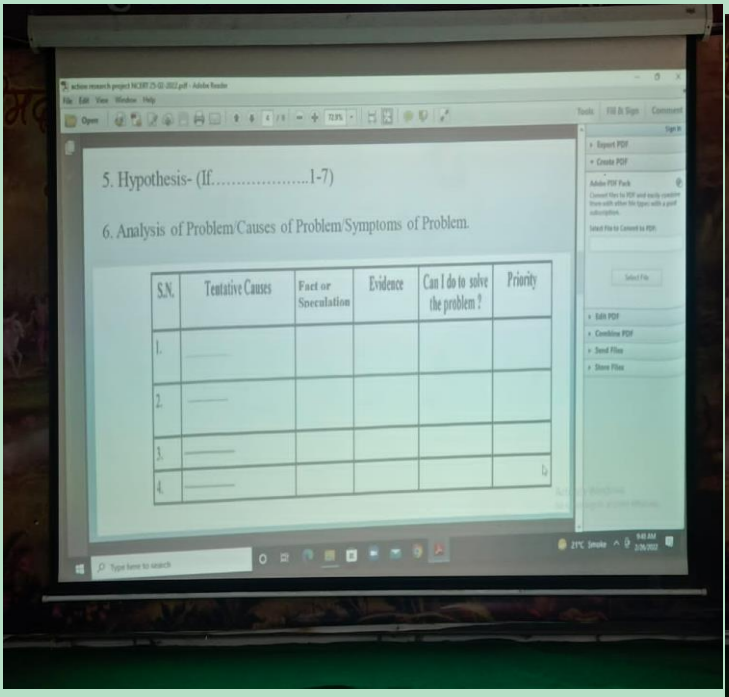

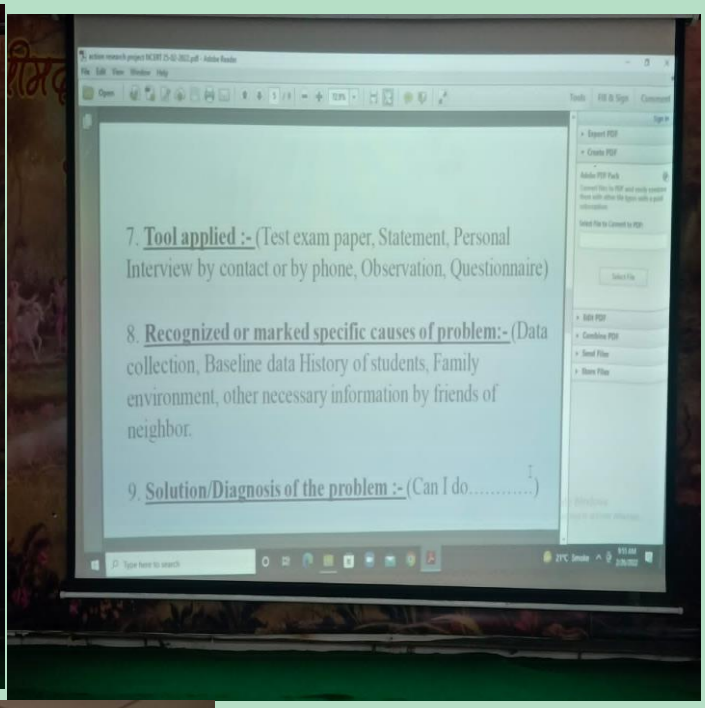

दिनांक- 26 फरवरी 2022 को विद्यालय मैं क्रिया शोध कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें श्रीमती सीमा शर्मा जी ने क्रिया शोध के बारे में प्रोजेक्टर के द्वारा विस्तार से बताया ।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

दिनांक 28 फरवरी 2022 को विद्यालय में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया गया । इस अवसर पर विद्यालय की आचार्या डॉ. स्टेला जी गुप्ता तथा श्रीमती रजनी जी बिष्ट ने अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया..

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस (National Science Day) हर साल 28 फरवरी को देश के विकास में वैज्ञानिकों के योगदान को चिह्नित करने और पहचानने के लिए मनाया जाता है। इस दिन, 1928 में, भारतीय भौतिक विज्ञानी चंद्रशेखर वेंकट रमन ने स्पेक्ट्रोस्कोपी के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण खोज की, जिसे 'रमन प्रभाव' कहा जाता है। यह दिन 'रमन प्रभाव' की खोज को समर्पित है। सीवी रमन को उनके काम के लिए 1930 में भौतिकी में प्रतिष्ठित नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। इस साल राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2022 का विषय 'सतत भविष्य के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी में एकीकृत दृष्टिकोण' ('Integrated Approach in Science and Technology for Sustainable Future') है।